भूमिका

हिंदी ग़ज़ल अपने आप में एक विस्तृत वांग्मय हैं और **समकालीन हिंदी ग़ज़ल** उसका व्यवस्थित रूप या चरम उत्कर्ष। हिंदी ग़ज़ल ने साहित्य में अपनी एक अलग स्वतंत्र पहचान बनाई है। हिंदी ग़ज़ल महज एक फैशन नहीं बल्कि एक नवीन और अनिवार्य काव्यान्दोलनों के रूप में आगे बढ़ रही है। समकालीन हिंदी ग़ज़लकार 'हिंदी ग़ज़ल' को एक अलग मुकाम और दिशा देते नज़र आ रहे हैं। हिंदी ग़ज़ल की सहजता और सम्प्रेषणीयता ही इसकी लोकप्रियता का आधार हैं।

समकालीन हिंदी ग़ज़ल की प्रमुख प्रवृत्तियां शोध में हिंदी ग़ज़ल में आए परिवर्तन और उसकी विशेषताओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। हिंदी ग़ज़ल आम जन जीवन से कितना जुड़ पायी है और सामाजिक विसंगतियों की पड़ताल किस तह तक करती है इन सब प्रवृत्तियों का उदाहरण सहित विश्लेषण किया गया है।

हिंदी ग़ज़ल की पृष्ठभूमि तैयार करने में जिन विद्वानो ने योगदान दिया है उनकी सूची बहुत लंबी है। मुख्यत: हिंदी ग़ज़ल का उदय सूफियाना अंदाज़ में अमीर खुसरो से माना जाता है पर विद्वान अपनी विद्वता और लोकप्रियता के आधार पर हिंदी ग़ज़ल का पहला ग़ज़लकार और जनक होने का दावा ठोकते नज़र आते हैं। हिंदी ग़ज़ल की पृष्ठभूमि को समझने के लिए शोध में उसकी परंपरा और विकास का संक्षिप्त में ज़िक्र किया गया है। मूल रूप से शोध का उद्देश्य **समकालीन हिंदी ग़ज़ल की प्रमुख प्रवृत्तियों** को दिखाना रहा है तथा हिंदी ग़ज़लकारों की दृष्टि किन-किन विषयों पर गई है उनकी समीक्षा कर विशेषताओं को चित्रित किया गया हैं।

हिंदी ग़ज़ल की प्रमुख प्रवृत्तियां उसका विषय वैविध्य है जिसने उर्दू ग़ज़ल परंपरा के स्वरूप से निकल कर एक नई धारा का निर्माण किया है। हिंदी ग़ज़लकारों ने आम आदमी के जन जीवन को समझा, समाज की विसंगति, असमानता, विद्रूपता, भ्रष्टाचार, को समझ कर उसका प्रतिरोध किया।

समकालीन हिंदी ग़ज़ल ने बेचैनियों, और प्रश्नों का जमघट लगाया है जो समाज की असंवेदनशीलता को विचलित करने और सोचने का आकाश पैदा कर रही है।

मुख्यत: शोध में दुष्यंत के बाद की ग़ज़ल परंपरा के ग़ज़लकारों की ग़ज़लों को लिया गया है जो दुष्यंत की परंपरा को और आगे की ओर ले जा रहे हैं।

भूमिका

"जिंदगी की जद्दोजहद से ख़ुश हूँ मैं दोस्त

बस दुनियाँ के रस्मों रिवाज़ मुझे मायूश कर देते हैं।"

हिंदी ग़ज़ल समाज के ऐसे तत्वों को विश्लेषित, उद्घाटित करने का प्रयास कर रही है जो जीवन को नीरस बनाने की भूमिका अदा कर रहे हैं।

हिंदी ग़ज़ल का प्रमुख विषय समाज की मूलभूत आवश्यकताओं की समस्या को समझना रहा है जिसमें ग़ज़लकारों ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिप्रेक्ष्यों का समाजशास्त्रीय उल्लेख किया हैं। ऐसी विषयक प्रवृत्तियों की जांच पड़ताल शोध में की गई है।

आभार

यह शोध जैसा भी बन पाया है उसके लिए मैं अनेक सज्जनों का आभारी हूँ। जिन्होंने शोध विषय से लेकर शोध सामग्री संकलन और शोध को पूरा करने में अपना मूल्यवान समय दिया है। सर्वप्रथम **गुरु डॉ॰ रामानुज अस्थाना** को नमन करता हूँ जिनके सान्निध्य में मुझे शोध करने का अवसर मिला। आपने शोध विषय में आने वाली हर समस्या को मेरे एक निवेदन पर आपना कीमती वक्त निकाल कर मुझे रास्ता दिखाया और शोध सामग्री से लेकर शोध को पूरा करने तक सभी आवश्यकताओं को शुलभ कराया। तत्पश्चात हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सभी सदस्यों का भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर अपना अमूल्य समय देकर शोध विषय की महत्वपूर्ण जानकारी दी और मेरा हौसला बढ़ाया।

शोध विषय को पूरा करने में मेरे दो मित्रों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा जिन्होंने शोध सामग्री से लेकर शोध की कमियों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मेरे मित्र जैसे भाई **देविन्दर सिंह** को सादर प्रणाम करता हूँ जिन्होंने शोध की सामग्री मुझे लाकर दी और समय समय पर मेरी प्रगति का निरीक्षण किया जिससे शोध समय पर पूर्ण हो सका और मैं मित्र **श्रीकान्त बोरकर** के धैर्य को नमन करता हूँ जिन्होंने अपना शोध विषय पूरा करते वक्त भी मेरे द्वारा सुनाई जा रही ग़ज़लों को बड़ी तन्मयता से सुना और उनकी पृष्ठभूमि की समीक्षा करने में मेरी मदद की।

भूमिका

आज मैं जो कुछ भी हूँ उनका श्रेय मेरी **माँ और पिता जी** को जाता है जिन्होंने मुझे इस काबिल बनाया और अपनी पुरानी परंपराओं को तोड़ मुझे पढ़ने-लिखने का अवसर दिया वरना कहीं किसी ज़मींदार, साहूकार के यहाँ मजदूरी कर रहा होता। माता-पिता जी के इस बलिदान को जीवन भर भुला नहीं सकता और उनके इस जज़्बे को सलाम करता हूँ।

"संविधान बना कर जिसने किया सबका उद्धार..

ये शोध मैं कर रहा हूँ उसी महामानव के नाम।।"